क्षणिकाएं !

रविन्द्र मरडिया

प्रकाशक :

Thank You !
PUBLISHERS

प्रतिलिप्यधिकार © रविन्द्र मरडिया, २०२२

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक से लिखित अनुमति के बिना, इस प्रकाशन के किसी भी भाग को किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक या मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी भी सूचना भंडारण और पुनर्प्राप्ति प्रणाली सहित, जिसे अब जाना जाता है, या आविष्कार किया जाना है, को पुन: प्रस्तुत या प्रसारित नहीं किया जा सकता है, सिवाय इसके कि एक समीक्षक जो एक पत्रिका, समाचार पत्र या प्रसारण में शामिल करने के लिए लिखी गई समीक्षा के संबंध में कुछ अंश उद्धृत करना चाहता है.

मूल्य : ₹ ४९०.०० सिर्फ

ISBN: 978 81 9566 295 1

प्रथम संस्करण
भारत में मुद्रित:
सिद्धि प्रिन्टेक, अहमदाबाद.

क्षणिकाएं !

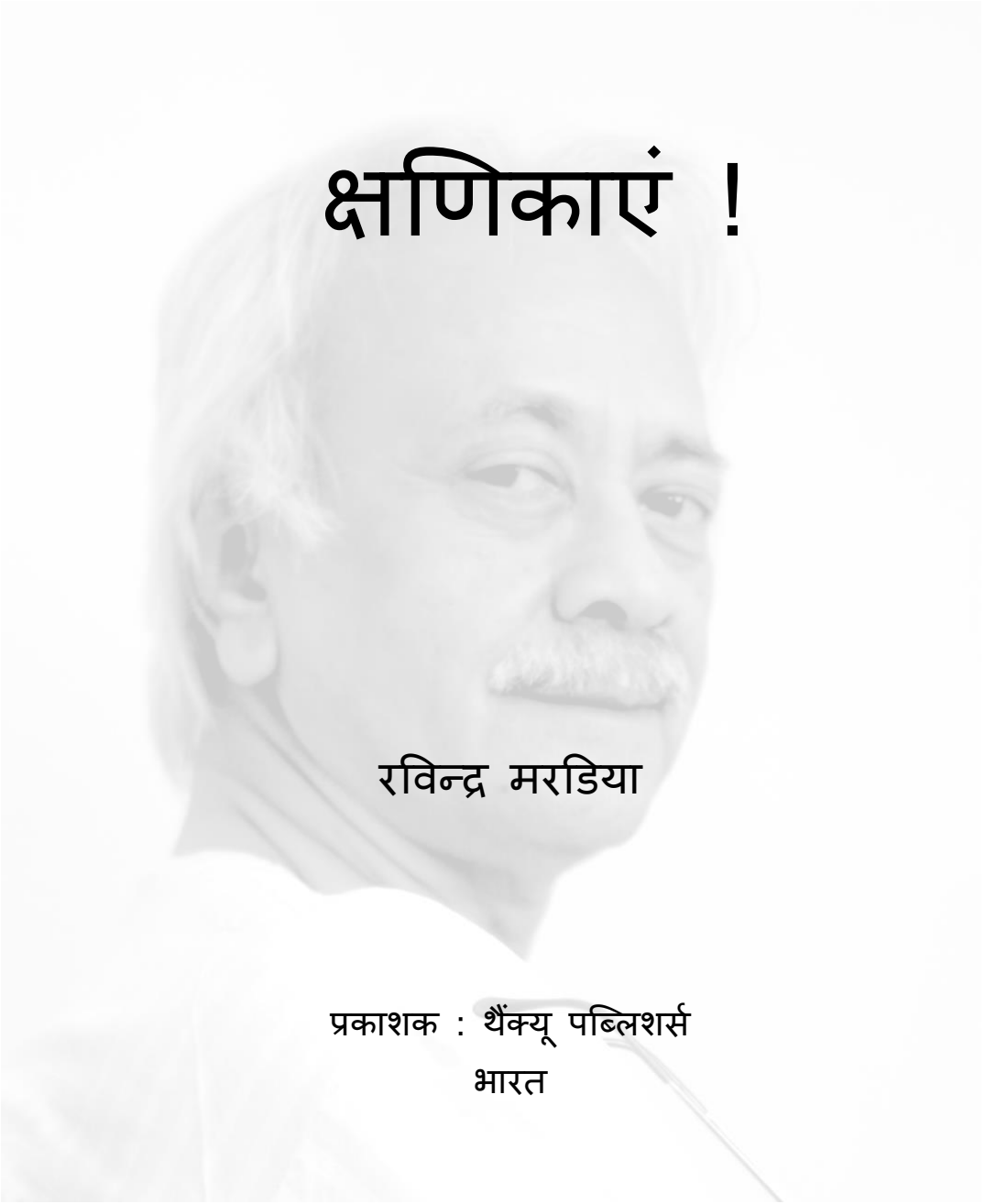

रविन्द्र मरडिया

प्रकाशक : थैंक्यू पब्लिशर्स
भारत

क्षणिकाएं !

समर्पित है

मेरे दोस्त
अरुण अग्रवाल
और
दिनेश बोकड़िया
को
जिनके साथ
मैंने अपने जीवन के
सुखद और दुखद क्षण
साझा किए हैं.

समीक्षा संदेश

श्री रविन्द्र मरडिया जी ने उनकी पुस्तक "क्षणिकायें" में उनके जीवन की अमिट छाप छोड़ी है. उन्होंने छोटी छोटी कविताओं के माध्यम से प्रेम, आशा, आत्मविश्वास, सुख-दुःख की सहज स्वीकृति, जीवन में परिवर्तन की अनिवार्यता, खुद से खुद का परिचय, संयोग-वियोग, जैसे जीवन के अनेक पहेलुओ पर भावनात्मक उदगार बखूबी प्रस्तुत किये है. अनूठी लेखन शैली, सरल शब्दो का उपयोग, जीवन उपयोगी विषय चयन की बारीकियां व विविधता उनकी रचनाओं की लाक्षणिकता दिखाई पड़ती हैं. उनकी रचनाओं में प्रकृति के अवयवो- सूर्य, चाँद, सितारे, हवा, गगन, पृथ्वी, समुद्र, बाग़ बगीचे, पुष्प, पंखी, ऋतुओ आदि का प्रासंगिक उपयोग, प्रकृति के प्रति उनके प्रेम और दर्शन का द्योतक है.

कविताओं के लिए सम्पूर्ण समर्पण, उनके तन्हाई के क्षणों को, खुशियों से भर देता है और सर्जनात्मक भाव स्वतः ही प्रकट होते हों ऐसा प्रतीत होता है. उनके आत्म संतोषी और खुद में ही परिपूर्ण व्यक्तित्व की झांकी उनकी रचनाओ में स्पष्ट दृष्टि गोचर होती है. इस काव्य संग्रह के लिए उनको

हार्दिक बधाई. भविष्य में काव्य रस से ओतप्रोत अविरत जीवन प्रवाह के लिए भी दिल से मंगल कामनाएं. भविष्य में उनकी कवित्त यात्रा के प्रति रूचि, श्रद्धा और संवेदना सदैव बनी रहें, ऐसी प्रभु से प्रार्थना.

डॉ. जगदीश प्रसाद, IFS (Retd,), अधिक अग्र मुख्या वन संरक्षक (निवृत), गुजरात राज्य, गांधीनगर

भूमिका

कविता अपने ख़्याल और अपनी भावनाओं को पेश करने का एक बेहद ख़ूबसूरत तरीका है. पहले कविता में छंद और अलंकारों को बहुत ज़रूरी माना जाता था, लेकिन आधुनिक काल में कविताएं छंद और अलंकारों से आज़ाद हो गईं हैं. कविताओं में छंदों और अलंकारों की अनिवार्यता ख़त्म हो गई और नई कविता का दौर शुरू हुआ. दरअसल, कविता में भाव तत्व की प्रधानता होती है. रस को कविता की आत्मा माना जाता है. कविता के अवयवों में आज भी इसकी जगह सबसे अहम् है. आज मुक्त छंद कविताओं की नदियां बह रही हैं. मुक्तछंद कविताओं में पद की ज़रूरत नहीं होती, सिर्फ़ एक भाव प्रधान तत्व रहता है.

आज की कविता में मन में हिलोरें लेने वाली भावनाएँ, उससे मन-मस्तिक्ष में उठने वाले सवाल और अनुभव प्रभावी हो गए हैं, और छंद लुप्त हो गये. मगर इन कविताओं में एक लय होती है, भावों की लय, जो पाठक को इनसे बांधे रखती है. मेरी कुछ ऐसी ही कविताओं का यह एक संग्रह है- 'क्षणिकाएं'. इस कविता संग्रह में कुछ छोटी-छोटी कवितायें हैं.

मेरा यह पांचवां काव्य संग्रह 'क्षणिकाएं' जल्द ही प्रकाशित होने जा रहा है. मैंने ये कविताएँ बहुत ही सरल और आसान

शब्दों में लिखी हैं. इसमें ज्यादा बड़े शब्द नहीं मिलते (और मुझे आते भी नहीं). साधारण हिंदी शब्द जो हम रोज़मर्रा के बोलचाल में उपयोग करते हैं, उन्हीं शब्दों से कविताएँ बनी हैं. सामान्य धाराप्रवाह में लिखी गयी ये छोटी-छोटी कविताएँ आसानी से हर पाठक को समझ आ सकती है. कहीं-कहीं जरुर कुछ लाइन प्रवाह से अलग प्रतीत होती हैं.

अंतरतम भावनाओं का उद्‌गम है, और मानवीय संबंधों के विभिन्न पहलुओं, विशेष रूप से प्रेम और प्रेमालाप से संबंधित हैं. प्रकृति मेरा सबसे प्रमुख प्रेम है, मेरी कविताओं में सर्वव्यापी है, और बहुत ही सूक्ष्म रूप से मेरे के दिल के गहरे जुनून के साथ तालमेल बिठाती है. अनुभव और जीवन की बाधाओं में अंतर्दृष्टि, शब्दों में एक आवाज ढूंढती है.

इन सबके साथ राजनैतिक और सामाजिक परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में इंसान की अंदरुनी और बाहरी कश्मकश के प्रत्यक्षदर्शी भी हैं. यह संग्रह उन्हें आकृष्ट कर सकता है, जो सचमुच बदलाव चाहते हैं, और मौजूदा व्यवस्था से बुरी तरह तंग और परेशान हैं. वे अपने आस-पास के सामाजिक भ्रष्टाचार और आर्थिक शोषण के खिलाफ लड़ना जरूर चाहेंगे.

आज के लेखन की सुपरिचित धरा से अलग यह एक नई कल्पनात्मक सृष्टि है, जो अपनी पंक्तियों को पाठक पर

बलात थोपने के बजाय उससे बोलती-बतियाती हैं, और ऐसा करते हुए वह चुपके से अपना आशय भी उसकी स्मृति में दर्ज करा देती हैं. समकालीन कविता के एक पाठक के रूप में मुझे लगा कि यह काव्य-कृति एक नई काव्य-भाषा की प्रस्तावना है, जो व्यंजन के कई बंद पड़े दरवाजों को खोलती है.

पन्नों के कैनवस पर शब्दों के रंग बिखेरने का प्रयोग !

रविन्द्र मरडिया

अनुक्रमाणिका

क्षणिकायें	19
बंद दरवाज़ा	20
सांत्वना	21
बंधन	22
कुछ समय बाद	23
मेरा कमरा	24
मैं, मैं हूँ	25
मेरे घर में	26
आशा	27
भूले बिसरे	28
ज़रूरी नहीं है	29
मातृभूमि	30
अनभिज्ञ	31
दृष्टिकोण	32
एक दिन यह फोन बजेगा	33
कितना घुटन भरी गर्मी...	34
सहानुभूति	35
मेरा रास्ता रोक दिया है	36
मैं बेखबर रहा	37
बेचैनी	38
तुम मुझे भूल गई	39
आपके स्वागत में	40
कर्म	41

अधूरा सपना 42
कविताओं का जाल 43
घर से भागा हूँ 44
फिर भागना चाहता हूँ 45
अस्वीकार्य 46
कौन याद करेगा 47
अब ले भी जाओ ! 48
नशे में नहीं 49
मेरे हालात 50
मेरी मृत्यु 51
कविताएं लिखने के लिए 52
मुझे सिखाओ 53
विदाई 54
मेरी कब्र 55
दुनिया छोटी है 56
तुम्हारे बिना 57
स्त्री के लिए 58
कुछ खोया है 59
मातृभूमि की याद 60
मेरी कवितायें 61
संपर्क में रहना 62
पृथ्वी 63
भीख मांगो 64
परमात्मा 65
मेरा दिल 66

प्रार्थना करो	67
तुम्हारी सुंदरता	68
कौन है भाग्यशाली ?	69
ये, तुम ही तो हो	70
कब तक सहन करना होगा	71
तिरस्कार	72
कैसे जी सकता हूँ	73
यह तो मैं हूँ !	74
विशुद्ध आनंद	75
मुझसे गलती हुई	76
धन्यवाद !	77
मैं पीड़ित हूँ	78
अत्याचारी	79
निरंतर परिवर्तन	80
बहुत अच्छा किया	81
जीवन का प्यार	82
मेरी किस्मत	83
मेरा भविष्य	84
हिंदुस्तान	85
प्यारी कविता	86
बूढ़ा हाथी	87
शोध करें	88
दोस्त	89
अपने अधिकार	90
हमारे सपने	91

रंग, रंग होते हैं 92
इंतजार में 93
भूल जाना अच्छा है 94
विश्वास 95
मेरे गीत 96
मौत 97
समय 98
खुद्दारी 99
जमाना जरूर बदलेगा 100
मेरे पास आओ 101
सांत्वना 102
कुछ समय बाद 103
जीना मुश्किल है ! 104
कुछ खोया है 105
विरोधाभास 106
मेरे प्यार के लिए 107
मेरा डर 108
दिन निकल रहा है 109
सब को जाना है 110
एक समुन्द्र 111
निराशा 112
इंतज़ार 113
अकेला नहीं 114
अगर 115
हलकी सी मुस्कान 116

परिचय	117
अवरोह	118
कैसे भूल सकता हूँ	119
किसी को मत बताना	120
कहाँ मिलोगे	121
यह हम नहीं हैं	122
भगवान	123
अकेलापन	124
मेरी मर्ज़ी	125
तू कौन	126
कुछ और क्षणिकाएं	127

क्षणिकाएं

एक पल के लिए
मेरे दिल को रोशन करो.
मेरे साथ इतना क्रूर मत बनो !
मेरे पास तुम्हें भूलने का
कोई उपाय नहीं है,
मुझे खुद को
हमेशा के लिए भूलना होगा !
तुम्हें त्यागने के लिए.
मुझे अपने आप को छोड़ना होगा,
हमेशा के लिए !

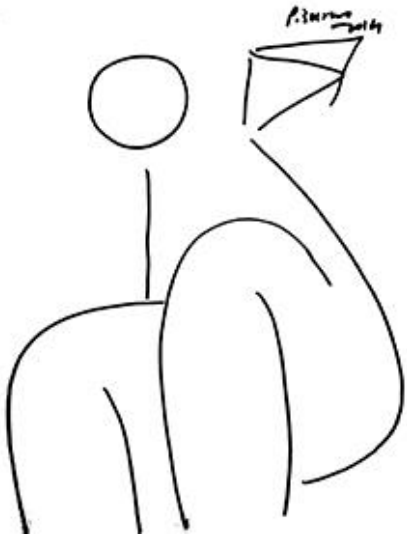

बंद दरवाज़ा

दरवाज़ा अंदर से बंद करके
कविता लिख रहा हूँ.
मेरी विचार धारा को
बाधित करने
अक्सर दरवाजा खटखटाया जाता है.
फिर, यह मेरे मित्र हैं,
और कोई नहीं.
उन्होंने अन्य सभी खुले दरवाजों को
नजरअंदाज कर दिया,
क्यों की वे यहाँ आना चाहते थे.
ऐसा लग रहा था
जैसे वे मेरी जासूसी कर रहे हों.
अचानक मेरे दिमाग में विचार आता है,
भगवान का शुक्र है,
वे मित्र हैं.

बंधन

एक आदमी औरत से जुड़ जाता है,
जब वे शादी की गाँठ बाँधते हैं.
और यह उपरवाले की नज़र में सही है.
उसका कानून, इसे मना नहीं करता है.
मेरे लिए,
शादी की गाँठ मुझसे जुड़ती है,
मेरी कविताओं के लिए.
क्या कोई, एक और आस्था है,
जो इस तरह के विवाह बंधन का
पालन करेगी ?
कोई ताकत हमें
जुदा नहीं कर सकती.
पंक्तियों की खींच, शब्द उड़ते हुए,
न बहर, न काफिया, न रदीफ़,
न कोई असंतुलित भाव,
न ही कोई जंगली विचार,
जिसने मेरे दिल को जकड़ लिया है.
कविताओं में.

मेरा कमरा

साफ़ सुथरा दिखता है.
गंदगी कहीं भी
नज़र नहीं आती.
ज़मीन पर
कुछ चीटियें रेंगती हैं
दिवार पर
एक छिपकली है.
कुछ मच्छर
लाइट के आस पास.
मकड़ी,
दीवार की फ़ोटो के पीछे.
ये सब भी तो करते होंगे ?
मेरे पास तो वाशरूम है,
इनके लिए अब क्या बनवाऊँ ?
मोदी जी,
इनको मैं कैसे समझाऊँ.

मैं, मैं हूँ

मैं तो, मैं ही हूँ
तुम सच कहना,
कैसा हूँ ?
अब तक बच्चा हूँ,
जैसा हूँ, वैसा हूँ.
अपनो से
छिपाता नहीं हूँ.
पर्दा कभी रखता नहीं हूँ.
मेरी गलतियाँ बताने वाले,
मैं तुमको
पसंद करता नहीं हूँ.
अपने आप से
मिलना नामुमकिन,
फिर भी
इस ख़्वाहिश के साथ
जीता हूँ.

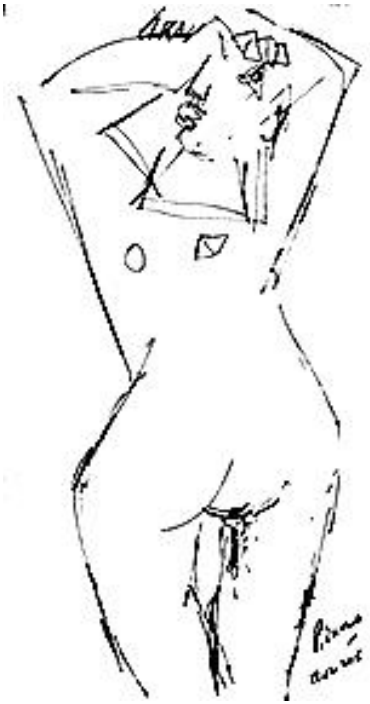

मेरे घर में

उसका घर
तो खुला रहता है.
ना ही कभी
खिड़की पर पर्दा रहता है.
फिर भी
घर में, कितना शोर रहता है.
शायद वो भी, तन्हा रहता है.

जब नदियां ही प्यासी हों,
तो किनारा भी, प्यासा रहता है.
अशांत अगर,
अपना मन हो तो,
सदा मन में, डर बना रहता है.
एक बार दुःख,
अपने घर आया तो,
अब मेरे घर में,
सदा यहीं रहता है.

आशा

जब से मैंने
होश संभाला था,
बस तेरा ही
सपना आता था.
मुझे कोई कभी
हरा सकता नहीं,
मैं खुद ही अपने
को हराता था.
अब जब खोने को
कुछ रहा नहीं,
मैं, धीरे धीरे
अपने को ही खोता था.
सपने सच नहीं होते कभी,
पर मैं मेरे दिल को ही
धोका देता था.
और जीने की, लालसा नहीं जाती,
इसीलिए अपने को,
मरने देता नहीं था.

भूले बिसरे

वैसे तो
आप मुझसे मिलते नहीं.
लेकिन आप, मुझे भूलते भी नहीं.
पास आकर, छू लो कभी हमें,
मुरझाये फूल, फिर से खिलते नहीं.
मेरे कानों में, कुछ गुनगुना दो कभी,
भूले बिसरे गीत,
हम कभी भूलते नहीं.
रोज़ सपनों में आकर,
सजाते हो आशियां अपना.
ये नक़्शे सिर्फ,
कागज पर ही बनते नहीं.
उस दिन, क्या कुछ कह दिया था,
तुमने, हम से,
आज तक अर्थ उसका,
हम समझ पाए नहीं.

ज़रूरी नहीं है

हर समय मुस्कुराना, ज़रूरी नहीं है.
आप खुश हो,
ये सबको बताना, ज़रूरी नहीं है.
गुम हो जाओगे,
अपनी नयी पहचान बनाने में ही कभी.
खुद को इतना छिपाना, ज़रूरी नहीं है.
पूरे होने से पहले ही,
बिखर जाएंगे ख्वाब,
सबको बताना, ज़रूरी नहीं है.
मेहनत और किस्मत,
दोनों हैं साथ,
खुद को फिर आज़माना, ज़रूरी नहीं है.
जरूरतानुसार, पास होकर भी,
मुफलिस ही बने रहें,
फिर, ऐसी दौलत कमाना, ज़रूरी नहीं है.

मातृभूमि

अगर दुनिया में सिर्फ एक औरत है,
तो धरती पर प्यार है.
दुनिया में अगर एक ही बच्चा है,
तो धरती पर बचपन है.
दुनिया में अगर एक ही पेड़ है,
तो धरती पर छांव है.
अगर दुनिया में सिर्फ
एक जमीन का टुकड़ा है,
तो धरती पर मातृभूमि है.

अनभिज्ञ

हम इस पुस्तक को भी
पढ़ना समाप्त कर देंगे.
हमें पता चल जाएगा कि
हत्यारा कौन है.
तब हम सो जायेंगे.
एक ही तकिये पर सिर रखकर.

हम इस तरह से
अपना जीवन व्यतीत करेंगे.
एक ही घर और
प्यार बच्चों को बाँटना,
और एक ही तकिये पर
हमारा सिर.
एक दूसरे के इतने करीब,
फिर भी इतने अनभिज्ञ.

दृष्टिकोण

वहाँ एक बूढ़ा आदमी बैठा है,
मटमैले समुद्र के सामने.
जो उसके जैसा मटमैला है.
उसकी दृष्टि,
दूरी में धुंधली हो जाती है,
जो क्षितिज के बिना है.
वे कहते हैं,
पृथ्वी से यौवन गायब हो गया है !
वहीं पास में एक बच्चा खेल रहा है,
फूलों और घास के बीच.
सपने, जो उसके जैसे रंगीन होते हैं.
वह बिना आंखें फेरे,
सूरज को देखता है.
और, वह कहता है,
धरती पर से
बुढ़ापा मिट गया है.

एक दिन यह फोन बजेगा

एक दिन यह फोन बजेगा,
और मुझे एक जानी-पहचानी
आवाज सुनाई देगी.
जो मौत के बहुत करीब होगी.

जीवन के स्वरों में,
और पृथ्वी की अन्य सभी ध्वनियों में.
एक शून्यता सुनाई देगी.
मेरे लिए कोई मूल्य नहीं होगा,
और उस पल मुझे,
न तो टिमटिमाते तारों की रौशनी चाहिए,
और न ही किसी बच्चे की हंसी.
तब मुझे सिर्फ एक जानी-पहचानी
आवाज ही सुनाई देगी.
जो मौत के बहुत करीब होगी.

कितनी घुटन भरी गर्मी...

जो किताब मैं पढ़ रहा हूँ,
और मैं जिस प्रिय की
लालसा कर रहा हूँ,
वह इसी ठिठुरन में है.
मैं हत्यारे को किताब में
सबसे ठंडी जगह पर बैठाता हूँ.
और जिस प्रिय के विषय में
मैं सोच रहा हूँ,
उसे समुन्द्र के किनारे भेज दो.
वहाँ फिर से हम,
कंधे से कंधा मिलाकर
बैठे रहेंगे.
इस भीषण गर्मी में,
मैं और आज़ादी...

सहानुभूति

जो हंसता है,
और जो प्रसन्न होता है,
उसके लिए कुछ सहानुभूति दिखाओ.
उसे कुछ दुख दो.

जो अँधेरे में रास्ता भटक गया है,
उसके लिए, कुछ सहानुभूति दिखाओ,
उसे कुछ रोशनी दो.

मेरे लिए भी सहानुभूति दिखाओ,
और मुझे कुछ जहर दे दो.
अगर मैं खुद नहीं कर सकता, तो
आप हो.

जैसे ही मैं अपनी आंखें बंद करता हूँ.
भगवान को इसके बारे में बताओ.

मैं बेखबर रहा

मैं एक खूबसूरत महिला के पास से गुजरा,
लेकिन रुका नहीं.
मैं एक प्यारा सा गीत,
गुनगुना रहा था,
बिना रुके.
मैं एक अद्भुत दुनिया में
जी रहा था,
लेकिन मैं वहाँ नहीं रहा.

बेचैनी

मेरे शहर में एक गली है,
एक शांत और संकरी गली.
सत्तर कदम नीचे,
और सत्तर कदम पीछे.
एक सिगरेट पीकर,
और एक सिगरेट,
वापस.

तुम मुझे भूल गई

तुम मुझे भूल गई,
ऐसा मत कहो,
ऐसा नहीं हो सकता.
मुझे विश्वास नहीं हो रहा है.
भगवान की कसम खाकर भी.

और यदि तुम परमेश्वर को भी,
अपना साक्षी बनाकर लाओ,
तो भी मुझे विश्वास नहीं हो होगा.
इस बात का कभी
विश्वास हो ही नहीं सकता.

आपके स्वागत में

बेर, करोंदों के पेड़
खिल गए हैं.
सड़क के किनारे पर
पर कैसे?
किस के लिए
और क्यों?
शायद गलती से.

कर्म

मैं खुशियों की तरफ बढ़ रहा था,
लेकिन मैंने महसूस किया, कि
दुखों ने मेरा रास्ता रोक दिया है.

मैंने अपने पिता से
मदद की गुहार लगाई.
लेकिन मुझे एहसास हुआ, कि
वे तो स्वर्ग में निवास कर रहे हैं.

मैं भगवान को याद कर रहा था,
लेकिन मैंने देखा, कि
मेरे कर्मों ने ही,
मेरा खुशियों की तरफ का रास्ता,
बंद कर रखा है.

अधूरा सपना

हम मिले,
हमने कुछ खा लिया,
कुछ पी लिया,
जो मेज पर था.
और कुछ, जो हमारी यादों में था.

कभी-कभी हम,
भविष्य की ओर हाथ बढ़ाते हैं.
रोटी पुरानी थी,
यादें कड़वी,
और भविष्य झूठा निकला.
हम जाग गए,
हम एक दूसरे से
अलग हो गए.

कविताओं का जाल

मैं पकड़ा गया हूँ,
कविताओं के मकड़ी के जाले में.

मैं खुद को
आज़ाद नहीं कर सकता.
और ना ही जी सकता हूँ...

लेकिन,
शायद, मैं जीने के बजाय
कविताएँ ही लिखूंगा...

घर से भागा हूँ

मैं नहीं चाहता कि
लोग मेरे सपने देखें,
जब मैं उनके दिलों में नहीं रहा.
इससे पहले कि मेरा अपराध
घृणा बन जाए,
मैं चाहूँगा कि वे मुझे भूल जाएं.
मैंने झूठ बोला है,
लेकिन, कभी किसी को
धोखा नहीं दिया.
में दो बार घर से भागा हूँ.
आत्महत्या करना चाहता था.
लेकिन, एक हजार बार,
मैंने अपने विचारों को बदला है.
अभी तक जिन्दा हूँ.
अपनों के साथ हूँ.

फिर भागना चाहता हूँ

कवितायें लिखते लिखते,
मेरे दोनों हाथों की परछाई,
कागज पर पड़, जड़ हो गई हैं,
मेरे अकेलेपन की चीख़
फिर से, अपनी चरम पर पहुँच गई है.
मैंने समय की सारी समझ खो दी है.
मुझे नहीं पता, कि
अब क्या समय हो गया है.
चाँद आधा है, तारे ग़ायब हो गए हैं.
यह एक ऐसी रात है,
जिससे, मैं बस भागना चाहता हूँ.
मेरे पास न तो भाग्य है,
न चटाई और न कंबल.
अपने जीवन का सामान
समेटने के लिए.
मेरे भगवान, मेरे एक आधे को मार डालो,
और मेरे दूसरे आधे को
रोने के लिए रखो.

यथार्थ

जब कभी,
मैं अपना दरवाज़ा थोड़ा
ज्यादा खोल देता हूँ,
दुनिया के सारे कुत्ते
भौंकने लगते हैं.

मानो दुनिया
किसी अजनबी का बगीचा हो,
और मैं वहाँ
दिन के उजाले से
मिल रहा हूँ.
मैंने किसी का क्या बिगाड़ा है ?
सिर्फ यथार्थ ही तो बताया है,
मेरी कविताओं मैं.

कौन याद करेगा

सर्दियों में,
मेरा दरवाजा,
उन लोगों की आत्माओं ने खटखटाया है,
जिन्हें मैं जानता हूँ.
जो मर गए हैं.

अब बसंत है,
मैं ठहराव में व्यस्त हूँ.
जब गर्मी आती है,
तो मेरे सिर पर,
दरिद्रता खड़ी हो जाती है.
जैसे सूरज.

लेकिन जब शरद ऋतु आती है,
तो मैं जानना चाहता हूँ,
कि मेरे मरने पर
कौन क्या कहेगा ?
कौन याद करेगा ?

अब ले भी जाओ !

मेरे कानों में हवा गरजती है.
मेरी आँखों में
ज़मीन की धूल.
मेरे दाहिनी ओर
अंधी खाई है.
मेरी बाईं ओर
जंग लगे गेट की चीख़.
मेरे पीछे झोपड़ी,
मेरे सामने दीवार.
मेरा दाहिना हाथ मेरी जेब में,
मेरा बायाँ हाथ दीवार पर.
मैं यहाँ हूँ,
भगवान, मैं यहीं हूँ !
अब ले भी जाओ !

नशे में नहीं

डरो मत,
मैं तुम्हारे सपने में ही
दिख रहा हूँ.
सामने नहीं हूँ.

अब इंतज़ार करो !
मेरे जाने के बाद,
तुम फूलों को देख सकते हो.
डरो मत, मेरे प्रिये,
जब मैं, अगली बार आऊंगा तो
मैं नशे में नहीं रहूँगा.

मैं अपने सपनों में, या
अपनी कविताओं में,
कभी नशे में नहीं रहता हूँ.

मेरे हालात

एक बार,
मैं एक क्षितिज था.
धुंध समुन्द्र के ऊपर तैर गई और
मुझसे और नहीं देखा गया.

एक बार मैं एक रास्ता था,
कोई मेरे ऊपर से नहीं गुजरा,
घास ने मुझे ढक लिया,
मुझसे और नहीं देखा गया था.

एक बार
मैं एक मुस्कान था,
मुझे नहीं पता कि क्या हुआ,
लेकिन,
मुझसे और नहीं देखा गया.

मेरी औकात

शहर में हवा चलेगी,
जिस दिन मैं मरूंगा.
और यह उजड़ जाएगा.

बच्चे का कोई कपड़ा,
जिसे सुखाने के लिए,
टांग दिया गया होगा.
वह वस्त्र
शोक के झण्डे के समान,
फड़फड़ाएगा,
जिस दिन मेरी मृत्यु होगी.

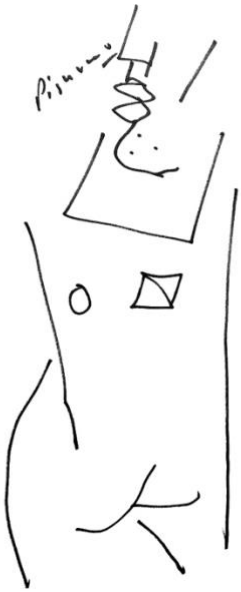

कविताएं लिखने के लिए

मुझे, बस थोड़ी सी बारिश चाहिए,
थोड़ी सी चाय,
और बस कुछ आंसू.
और आज मुझे उनकी
सख्त जरूरत है.

यह कमरा,
यह रोशनी,
यह कलम,
और ये कागज़.
और मुझे कब्र चाहिए,
जिसकी चाबी मेरी जेब में है.
शांति से कविताएं लिखने के लिए.

मुझे इन सब चीजों की जरूरत है.
इस कमरे में बैठे,
इस दरवाजे के पीछे.

मुझे सिखाओ

मुझे कविताएं लिखना सिखाओ,
मुझे सिखाओ,
भेड़ियों के पंजों के निशान बनाना.
मुझे सिखाओ,
ताकि दूसरों को पता चले,
मेरे शब्द कहाँ से आते हैं.
और कहाँ जाते हैं.
मुझे सिखाओ,
शब्दों से आक्रमण कैसे होता है.
ताकि मेरी कविताओं को,
जीने का अधिकार मिले.
और तुम्हारी तरह,
जमीन पर रहने का.

मुझे सिखाओ,
भेड़ियों के पंजों के निशान
कैसे लिखे जाते हैं

विदाई

मुझे एक प्रियतमा दे दो.
जो प्यार करे,
और फिर छोड़ दे.
मेरा दिल जुदाई के लिए तड़प रहा है.
और यह जुदाई,
एक कविता के लिए.
मुझे कोई रास्ता दिखाओ.
एक जगह को हमेशा के लिए छोड़ देना.
मेरे दिल से गुज़रने वाला,
एक रास्ता है.
और एक कविता,
उस रास्ते से गुज़र रही है.
मुझे रहने के लिए,
एक अजीब स्थान दो.
मेरा दिल जन्मभूमि के लिए
तड़प रहा है.
और उस जन्मभूमि की
एक कविता के लिए.

मेरी कब्र

मेरी कब्र
पर स्मारक मत बनाओ,
न ही संगमरमर का
पत्थर लगाओ.
किसी के नंगे पांव में
पहनने के लिए,
बस एक जोड़ी जूते
वहाँ छोड़ दो.
मेरी कब्र पर,
फूल चढाने की
जरूरत नहीं.
कभी कभी,
कुछ रोटी छोड़ जाना,
किसी भूखे के लिए.

दुनिया छोटी है

मुझे,
कैसे दौड़ना चाहिए ?
मुझे क्यों,
दौड़ना चाहिए?
मुझे कहाँ,
भागना चाहिए ?
दुनिया बहुत छोटी है,
इस घर के जेल परिसर,
जितना छोटी है.

तुम्हारे बिना

तुम्हारे बिना,
जीवन
एक काला सागर है.
एक मंदिर की तरह है
जिसके
सब देवता,
रूठ गए हैं.

स्त्री के लिए

पुरुष ने स्त्री के लिए
क्या नहीं बनाया?
राष्ट्र का भाषाएँ,
जनजातियाँ,
देश.
आदमी ने सीमा तय की,
और उसके ऊपर,
युद्ध को,
प्रहरी बना दिया.
स्त्री के लिए लड़े गए,
इस युद्ध में,
हमने जो हासिल किया है,
केवल कविता, और संगीत है...

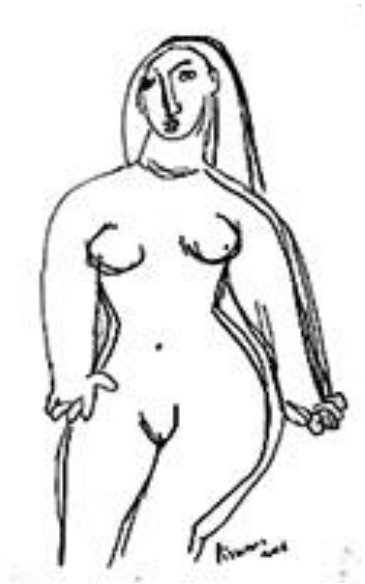

कुछ खोया है

कुछ खोया है,
किसी साज का तार,
कहीं टूट गया है.
मेरी जिंदगी, बात करने लगती है,
हवा चलने पर ही.

एक जंगल की तरह,
जो पक्षियों से अनजान है.
इस जीवन के दिन,
सुख-दुख,
किसी न किसी से,
भाग गए हैं.
वे किसी से भाग गए हैं
और अब कहीं अकेले हैं,
बेकार हो गए हैं.
एक नास्तिक दुनिया में
एक भक्त की तरह.

मातृभूमि की याद

मुझे ऐसा लगता है,
जैसे पन्द्रह
या बीस साल पहले,
मुंबई की सड़कों पर.
मैं एक सपने के बाद जागा.
जो मृत्यु के समान लंबा था.
और मैं जागते ही चौंक गया.
और शब्द "मातृभूमि",
मेरे हाथों से गिर गया.
और मुंबई की सड़कों पर,
टुकड़ों में बिखर गया.

मेरी कवितायें

मेरे गीत और मेरी कवितायें,
ये आवाजें, और ये राग, हमेशा मेरे साथ हैं.
एक वफादार प्रेमिका की तरह.
वो मुझसे कितनी भी दूर क्यों न हों,
वो हमेशा मेरे करीब होते हैं.
कोई फर्क नहीं पड़ता, कि
मैं कितनी बार ये आवाजें,
और इन रागों को सुनता हूँ.
वे हमेशा मेरे लिए,
एक वफादार प्रेमिका की तरह,
नई होती हैं.
ये आवाजें और ये राग,
साल के हर मौसम में,
हमेशा तरोताजा रहते हैं.
वे हर जगह पृथ्वी पर,
सूरज और चाँद की तरह हैं.
एक वफादार प्रेमिका की तरह...

संपर्क में रहना

यदि तुम
अपना फ़ोन नंबर बदलते हो-
जब भी,
कभी भी.
कृपया अपना नया नंबर,
एक कागज़ पर लिख देना.
और इसे मेरी कब्र में
दफना देना.
शायद, फिर कभी
तुमसे बात करने की
इच्छा हो जाये.

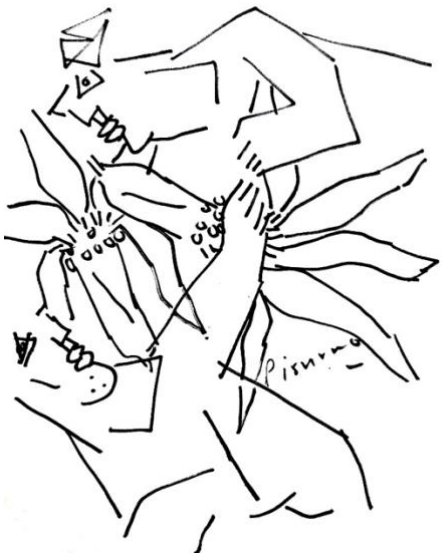

पृथ्वी

पृथ्वी ने तुम्हें क्या बताया,
बारिश के बाद ?
उसने मुझे गीली मिटटी की सुगंध,
व फूलों की गंध के बारे में बताया.
और क्या?
इसने मुझे बताया कि सूखा है,
कि जब फसलें हरी होती हैं,
तो जलती हैं.
कि वहाँ जंगल है,
जो कुल्हाड़ियों की आवाज से,
आहें भर रहा है.
और भी बहुत कुछ,
इसने मुझे बर्फ़ पड़ने पर,
भाप वाली छतों के बारे में बताया,
ट्रेन की सीटी के बारे में,
जो दूर से सुनाई देती है.

भीख मांगो

मेरे दोस्त,
अगर भीख माँगते हो,
भिक्षा माँगते हो,
घर-घर भीख मांगो.
हर हाथ से भीख मांगो.
घर पर बेहतर है,
कि कंगाल रहो.

भाग्यशाली हो,
किसी विदेशी भूमि,
पर बड़े रईस की,
तुलना में.

परमात्मा

"तुम महान से महान हो,
कोई नहीं जानता कि
तुम कितने महान हो.
मूढ़, तुझे आकाश
और पृथ्वी पर ढूंढ़ते हैं.
मंदिरों और मस्जिदों मैं,
गुरुद्वारों और चर्च,
मैं ढूंढ़ते हैं.
तुम वफादार, दयावान,
हर अच्छे इंसान के
दिलों में पाए जाते हो.

शाश्वत और सर्वशक्तिमान,
परमपिता परमात्मा
परमेश्वर,
अमर, और दयालु.

मेरा दिल

आह, यह तो मेरा दिल है,
और यह -
सच्चे प्यार का मतलब है !

दूसरों की तरह,
बेशर्मों की तरह,
प्यार करना,
मुझे अप्रत्याशित पीड़ा देता है.
और मेरा गरीब दिल,
हर आह और कड़वे रोने का
मूल स्रोत है.

आह, यह तो मेरा दिल है,
और यह -
सच्चे प्यार का मतलब है !

प्रार्थना करो

मुझे आशा दो,
मुझे विश्वास दो,
मुझे खुशी दो,
प्रार्थना करो.
मेरा भविष्य,
आपके दान से प्रशस्त हो.
प्रार्थना करो, की
मेरा नाम सहानुभूति
प्रज्वलित करे,
प्रार्थना करो.
मजनूं की दुखद कहानी
स्मृति को सताती है,
प्रार्थना करो.

तुम्हारी सुंदरता

तुम्हारी सुंदरता,
शायद ऊपरी शक्तियों का उपहार है.
मुझे प्यार ने लगभग पागल कर दिया है.
कुर्बानी का बेचारा दिल,
सदा के लिए तुम्हारा बंदी है.
मुझे अलगाव की सजा क्यों,
प्रार्थना ?
तुम भी, मेरे प्यार में बर्बाद हो रहे हो.
बताओ, खुशी के दिन कब शुरू होंगे ?
आह, मैंने तुम्हें जाते हुए देखा.
बहकावे में न आयें,
नहीं तो बुरे लोग,
तुम्हारा नुकसान कर सकते हैं.
अपनी गुलाबी पोशाक में,
खिड़की के पास न खड़े हों,
वरना कोई बुरी नजर
तुम्हारा नुकसान कर सकती है.

कौन है भाग्यशाली ?

हर कोने में प्रेमी,
दयनीय स्थिति में खड़े होते हैं.
मेरी आँखों की रोशनी बताओ,
कौन है भाग्यशाली ?
अगर ग़म मुझे मार दे,
तो ख़ुशी मुझे मिलेगी.
क्योंकि, मैं सीख लूँ,
और
मुझ पर कुछ दया आ जाए.

ये तुम ही तो हो

क्या उसे याद होगा,
वह, मेरी उज्ज्वल मोमबत्ती,
और मैंने अपने पंख लगाए हैं.
उसके प्रकाश ने आकर्षित किया है.
तब तुम को भी जला देना, उन सभी के समान,
जो तुझ पर आशा रखते हैं.
हवा में मेरा रोना खो जाता है,
लेकिन तेरी निशानी रह जाती है.
हृदयविदारक सौन्दर्य,
एक-दो बार तुझे देखने वाले,
हजार बार, या उससे अधिक बार कहेंगे, कि
तुम्हारी निगाहें नशीली हैं.
किसी भी इंसान को बेसुध करने के लिए,
तुम मुझे अपनी लौ की ओर
आकर्षित करती हो;
विजयी तुम, मैं अपने भाग्य को रोता हूँ.
जब तुम उसके पास होते हो,
रवि, तुम एक हजार बार मरते हो.

कब तक सहन करना होगा

तुम हँस रहे हो,
हँस रहे हो,
प्रिये, मेरे दुःख पर.
मानो मेरा दुःख,
कुछ मज़ेदार हो, प्रिये.
आपके घर,
और बगीचे के चारों ओर,
धनवान लोग ही
नज़र आते हैं.
और आप शहद के रूप में
मीठे होंठों के साथ हँसते हैं.
जब से हम
आपके साथ चले हैं,
याद है, अपने दोनों के आनंद के लिए.
हर दिन नए सिरे से घायल हुआ हूँ.
मुझे यह कब तक सहन करना होगा?

तिरस्कार

हमारी आत्मा में,
जो पक्षी गाते थे,
वे डरे हुए थे.
जैसे वे भाग गए,
और भारी मन से भटक गए.
रवि, कभी उससे प्यार करता था.
लेकिन अब,
वह तिरस्कार की हकदार है.
हाँ, वह झूठी थी,
उसने सब कुछ व्यर्थ कहा.
हमने फिर कभी
प्यार के बारे में बात नहीं की,
या सोचा भी नहीं ...
गले लगाए बिना,
अजनबी हम चले गए.....

कैसे जी सकता हूँ

प्यार करने के बजाय,
जंजीर में बांधकर,
जेल में डाल दिया जायेगा.
तुमने मुझे.
कितना दुःख पहुँचाया है,

मेरी चालाक प्रिये !
बेचारा रवि पहले से ही,
इंतज़ार कर रहा है.
चूँकि, उसकी प्रियतमा
उसके प्रेम को रौंदती है.

तुम्हारे लिए गीत,
और मेरी प्रतिभा पर्याप्त नहीं है.
मैं कैसे जी सकता हूँ.
माफ कर दो...
अगर चला गया तो, वह है.
जिसे मेरा दिल चाहता है?

यह तो मैं हूँ !

ओह, यह तो मैं हूँ !
मेरे जलते दिल को
अब चैन नहीं आता.
ओह, यह तो मैं हूँ !
मेरी चमकदार आंखों वाली,
प्रेयसी मुझसे दूर रहती है.
रात भर मैं तारे गिनता हूँ.
कोई, बताओ
वो दूर क्यों रहती है ?
क्या प्यार का कोई इलाज है ?
मेरे प्यार ने मुझे,
अंदर से खोखला कर दिया है.
ओह, यह तो मैं हूँ !

विशुद्ध आनंद

अगर मैं, तुम्हारे पास नहीं आता,
और एक चुम्बन नहीं चुराता,
तो यह तुच्छ दुनिया,
मुझे कोई आनंद नहीं देती.
कोई और खुशी नहीं होती, जो यह दे सकती है.
तुम्हारा प्यार ही मुझे खुश कर सकता है.
महसूस करा सकता है, कि मैं जिंदा हूँ.
तुम्हारी निगाहें दुनिया को,
उदात्त प्रकाश से भर देती हैं.
ताकि इसमें शामिल, सभी रहस्यों से,
मैं दिव्य हो सकूं.
मैं उस प्रकाश के लिए,
तुम्हारी महान भावनाओं का ऋणी हूँ.
जो मेरे पूरे जीवन को,
विशद्ध आनंद से भर देता है.
मेरे प्यारे सपने, आसमान से भी ऊंचे हैं.
मेरे मार्गदर्शक सितारे,
आपकी प्यारी आंखें हैं.

मुझसे गलती हुई

मैं, तुम्हारा बदकिस्मत प्यार,
भूल गया कि आनंद क्या है.
एक समय था,
जब तुम मेरे सिवा,
किसी और को नहीं चाहते थे.
अब तुम बदल गए हो.
और तुम्हार पुराने प्यार को,
तुम देखने से भी इनकार करते हो.
क्या कारण है, मेरे प्यार ?
अपनी मजबूरियां या प्राथमिकता को समझाओ ?
मैंने ऐसा क्या किया है, कि
तुमने मुझे ऐसे छोड़ दिया.
जैसे कोई फूल तोड़कर, फेंक दिया जाता है?
मैं क्या करूँ, व्याकुल और दुखी,
जैसा कि मैं अभी हूँ.
मैं तुम्हें अपना दिल,
कभी कैसे दे सकता था ?
अरे कैसे?

धन्यवाद !

धन्यवाद !
प्रिय साथियों,
आज हमारे पास जो भाग्य है,
उसके लिए.
ऊपर के सितारों का,
वहीँ बिराजे
हमारे पूर्वजों का,
मेरे प्रिय दोस्तों,
और दुश्मनों का.
कुछ दिलजलों का,
कुछ दिलवालों का.
धन्यवाद !

मैं पीड़ित हूँ

मेरा क्या कसूर है, कि
तुमने मुझे सताया,
इतना सताया ?
कोई मुझे बचाने का,
प्रयास नहीं करता.
तो भी, मैं
व्यर्थ नहीं रोता.
क्योंकि मेरा समय पलटेगा.
मैं पीड़ित हूँ.
लेकिन, आपका मातम करने वाला,
और कौन होगा?

अत्याचारी !

प्रिय व्लादिमीर पुतिन !

अफ़सोस !
मेरे शब्द, तुम तक नहीं पहुँचते,
तुम्हारे दिल को नहीं छूते.
परन्तु, जब हम चले जाते हैं,
तब, हमारे कर्मों के फल, लिखे जाते हैं.
तुमको बहुत दुख होगा,
तुम व्यथित हो जाओगे.
ग़रीबों के बेरहम वध के लिए,
अत्याचारी !
इस पुराने ब्रह्मांड ने,
कई भगवान देखे हैं.
अत्याचारियों की स्मृति,
शापित और घृणित है.
हे जल्लाद !
तू बदला लेने वाली तलवार से मरेगा.
बेखबर, बहुत देर हो चुकी है,
अपनी लूट बंद करो,
अत्याचारी !

निरंतर परिवर्तन

कल के गुलाम आज के राजा.
कल का वादा आज धुल गया.
पुराना दुश्मन आज दोस्त है.
जमीन और समुन्द्र पर सक्षम नहीं हैं,
हमेशा के लिए स्थिर रहने के लिए.
अपवाद के बिना,
प्रकृति, सारी सृष्टि को बदल देती है.
यह जीवन का नियम है.
"निरंतर परिवर्तन".
क्या नहीं बदलता है ?
यह अकल्पनीय है.
क्या ऐसा कानून अक्षम्य हो सकता है ?
जैसे पक्का स्टील जंग खाकर कमजोर हो जाता है.
वैसे ही हर कदम, धूल में बदल जाता है
आज का संबंध कल से नहीं है.
प्रत्येक दिन के प्रत्येक मिनट में,
नया ज्ञान प्रकाश करता है.
हर अँधेरे में कम से कम,
एक रौशनी चमकती है.

बहुत अच्छा किया

उसने आपके प्यार को ठुकरा दिया.
बहुत अच्छा और अच्छा किया.
आप उसके लिए पागल और अस्वस्थ हैं.
मुझे बताओ,
आपको ऐसा क्यों करना चाहिए ?
मैंने तुमसे कहा था, कि पीड़ित न हों,
और तुम्हारी लालसा शांत हो.
वह, जिसे तुम बहुत प्यार करते हो,
अब दूसरे से प्यार करती है.
तुम आहें भरकर,
अपना दिल तोड़ सकते हो.
बहुत अच्छा और अच्छा
मैंने तुमसे कहा था.
काले बालों से दूर रहो,
सर्पदंश से दूर रहो.
मुझे बताओ, क्या मैं सही नहीं था ?

जीवन का प्यार

दिल की धड़कन
मेरे दिल की धड़कन ने कहा,
"अच्छे दिन आने वाले हैं".
आगे भाग्य है ... महान !

गौरवशाली दिन
अभी आना बाकी हैं !
आगे और भी है . .
मेरे दिल की धड़कन ने कहा,
नेक काम,
कोई झल्लाहट नहीं,
मेहनत के पसीने का फल
मिलना बाकी है !

मेरे समकालीन परिभाषित करते हैं,
पहले का समय ठीक था.
इन शब्दों से मुझे नफरत है.

मेरी किस्मत

मुझे, तुम्हारे बिना,
भगवान या धर्म की
आवश्यकता क्यों है ?

मेरी प्रियतमा,
तुम मेरी चैन हो
सुकून हो.
तुम मेरा ताज हो,
तुम मेरा सिंहासन हो,
आह! क्या मेरी अंधी किस्मत
नहीं जागेगी ?
आह !

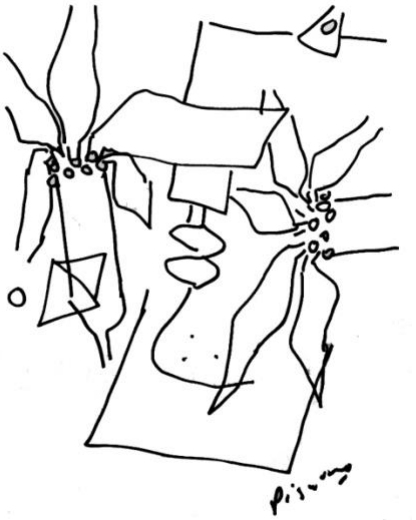

मेरा भविष्य

घर की चौखट से बाहर निकलकर,
मेरी दुर्दशा पर, आश्चर्य करते हुए,
मेरे मुख से ज्वलनशील शब्द निकलते हैं.
क्या आकाश,
मेरी त्रासदी को भांप लेगा ?
भविष्य मुझे दिखाई दे, प्रगट हो.
क्योंकि मुझ में, और सब्र नहीं,
परदे खोलो, मेरी किस्मत पर से.
मेरा क्या होगा ?
मुझे नहीं पता, बताओ ?
कौन तय कर रहा है,
मेरी किस्मत, और मेरा भविष्य ?
मुझे बताओ,
अगर कोई विवेक बचा है ?
या मेरी जिंदगी आंसुओं में डूब जाएगी ?
मैं इस अजीब दुनिया में,
लुप्त हो रहा हूँ.

हिंदुस्तान

हिंदुस्तान कैसा है ?
अगर आपने मुझसे पूछा,
हिंदुस्तान की तरह क्या है ?
मैं कहूँगा कि यह आकाश जैसा है.
यह एक मखमली कपड़े की तरह,
कोमल है.
पहाड़ी चारों ओर,
फलों के पेड़ों से लदी हुई हैं,
और समुन्द्र की शक्तिशाली तेज लहरें,
जमीन से टकराती हैं.
चारों तरफ छोटे बच्चे,
फूलों और घास के बीच खेलते हैं.
बालकों द्वारा गाए गए
गीतों की तरह है.
हिंदुस्तान एक विशाल पुस्तक है.
जिसे उड़ते हुए पक्षियों द्वारा,
पढ़ा जाता है.

प्यारी कविता

(यहाँ कविता किसी लड़की का नाम नहीं है)

बचपन से ही,
मुझे कविता की मीठी भाषा से,
प्यार हो गया था.
कविता, जहर से भी मीठी.
चुम्बन से भी प्यारी कविता.
मौत से भी प्यारी शायरी,
पहले दिन से मुझे कविता पसंद आई.
मैंने उसे जुदा नहीं किया.
मैं जीवन की दौड़ में, शामिल हो गया.
मैं आगे दौड़ना चाहता था,
पहाड़ों पर चढ़ने के लिए,
मैं कविता की पंक्तियों से
महान कविओं के बीच,
कदम रखना चाहता था
मैंने अपने आप से कहा:
"कल, मैं उनमें से एक बन जाऊँगा".
काश !

बूढ़ा हाथी

कहते हैं :
बूढ़े हाथी जान लेते हैं,
उनके मरने का दिन,
कब नजदीक आ रहा है.
उनकी मृत्यु से कुछ दिन पहले ही.

वे जंगल के एक कोने में
खुद को एकांत में रखते हैं.
और वहाँ, लेटे हुए,
मृत्यु की प्रतीक्षा करते हैं.

मुझे बूढ़ा हाथी बनने का डर,
अब परेशान कर रहा है.

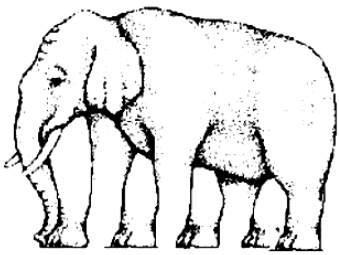

शोध करें

अपने आप की.
अपने आप से,
तुलना न करें.

दु:ख के साथ मेल न करें.
आप हर चीज के प्रति,
उदासीन हो जाएंगे.

खुशियों से,
खुद का अभिमान मत करना,
या तुम नशे में हो जाओगे.

संघर्ष से ही, खुद को समेट लेना,
आपको शोध की आवश्यकता है.
जरा इसके बारे में सोचो.
शेक्सपियर, शेक्सपियर है !

दोस्त

एक अच्छे दोस्त की,
आँखों की रोशनी छिपती नहीं है.
लेकिन जब दुनिया अँधेरी लगती है,
तो रोशनी कर देती हैं.
एक अच्छे दोस्त के शब्दों पर,
आदमी भरोसा कर सकता है.

नई आशा,
वे दूर-दूर तक
प्रसारित करते हैं.
जीवन का मार्ग कठिन,
और कठोर है.

जब बुरी ताकतें हावी होती हैं,
तो एक अच्छे दोस्त के,
पास होने का
एहसास कराती हैं.

अपने अधिकार

यदि तुम,
पड़ोसी के अत्याचार को सहन करोगे,
और सिर पर हाथ रख के बैठे रहोगे,
तो बिना भोजन किए,
चिंतित तुम सो जाओगे.
यदि आप अपनी शिकायतों की,
परवाह नहीं करते हैं,
और अपने अधिकारों का
हनन होने देते हैं,
तो कोई भी व्यक्ति,
आपके मामलों से, चिंतित नहीं होगा.
आप ही हैं,
जो अपने भाग्य के लिए लड़ सकते हैं.
समुन्द्र की मछलियों का रोना,
कौन सुनता है,
जब भूख में शार्क उन्हें,
पकवान बनाती है ?

हमारे सपने

रातें आएंगी,
और दिन बीतेंगे.

जब पक्षियों की,
कतारों के बाद कतारें उड़ती रहेंगी.

हमारे साथ मौसम,
स्मृति चिन्ह के रूप में रहेंगे.

हमारा साझा सपना,
आइए इकट्ठा करें.
हर रंग के सपनों को.

हर रंग, और हर रंग की
अपनी एक खास सुगंध होती है.
पहचान होती है.
जैसी हमारे सपनों की.

रंग रंग होते हैं

हर रंग को एक सा मत कहो.
मत कहो सभी गुलाब,
एक जैसे होते हैं.
प्राप्त सुगंध के लिए.

हर रंग एक जैसा नहीं.
ठंडी हवा का,
हर झोंका जो उड़ता है.
सभी दिशाओं से,
अपनी इच्छाओं की,
एक अलग भाषा बोलता है.

घने छायादार जंगलों को,
बसंत के रंग में,
प्रेमियों के आने का,
इंतज़ार रहता है.

इंतजार में

उसके सिर का आवरण खुला था.
उसके बाल
हवा से बिखरे हुए.
उसकी उग्र आँखें,
दूर क्षितिज पर,
टिकी हुई थीं.
जो आँसुओं से भरी थीं.
किसी के आने का इंतजार,
उसके गुलाबी होठों पर,
एक हलकी सी मुस्कान,
बिखेर रहा था.

अवरोह

अँधेरी रात के,
दुःस्वप्न से भोर तक,
उसके दिल ने, रोमांस के,
अनगिनत महाकाव्यों को सजाया था.

दिवाली की शाम की याद,
उसके सिर में आग की लपटों की तरह,
टिमटिमा रही थी.

सुबह जब तक धूप आई,
तब तक बादल उसके माथे पर,
जमा हो चुके थे.

जुदाई की सर्दी उसके पीछे खड़ी थी.
उसके सामने पहाड़, एकाकी, अभेद्य,
खड़ी अवरोही और कठिन चढ़ाई के साथ.

विश्वास

मुझे नहीं पता था,
रातें लंबी और ठंडी होती हैं.
मैं ठीक से सो नहीं पाता.
आग के बारे में सोच रहा था.
दरवाजे बंद हैं.
पहरेदार ड्यूटी पर हैं.
मेरा दुश्मन मजबूत है.
मैं उसे दूर नहीं कर सकता.
यहाँ किसी का कोई ठिकाना नहीं.
मैं ग़म और दर्द से बीमार हूँ.
ख़ुशियाँ चकाचौंध में बदल गई हैं,
जिनका मैं पीछा करता रहता हूँ.
लेकिन कभी समझ नहीं पाता.
आपने रवि का विश्वास,
और धर्म छीन लिया है.
बिना किसी वजह के.

मेरे गीत

मेरी कविताओं,
मेरे गीत,
अगर मेरे जाने के बाद,
किसी के लिए आप खुशी लाते हो,
किसी के लिए मरहम साबित करते हो,
बीमारी से किसी को ठीक करते हो, तो ठीक है.
आप यहाँ पर रह सकते हो.

यदि नहीं,
तो मेरे साथ चलो,
जब मैं यात्रा कर चुका हूँ.
और आने वाली पीढ़ी के लिए,
स्थान को रिक्त कर दो.
क्योंकि ऐसे बहुत से हैं,
जो इस संसार में लटके रहते हैं.
जबरदस्ती, बिना किसी कारण,
बिना किसी के उपयोग के,
जिंदगी बहुत छोटी होती है.

मौत

कहते हैं :
भगवान द्वारा, पलक झपकते ही.
मौत कभी-कभी सौ परिवारों के लिए,
त्रासदी बन सकती है.
मौत वहाँ तुम्हारा इंतज़ार कर रही है.
जीना कैसा था?
मैं नहीं जानता.
जीवन का आंकलन करने के लिए,
आपका माप क्या है ?
मैंने उन्हें देखा है.
जो एक सदी, तक जीवित रहे हैं.
और फिर भी खाली दिल,
और दिमाग के साथ, दुनिया छोड़ गए.
जीवन को,
उसकी लंबाई से नहीं,
इसकी गहराई से मापें.

समय

कुछ ऐसे लोग हैं,
जो अपने दाएं को बाएं से,
भ्रमित करते हैं.
दोनों का सम्मान करते हुए,
सतही भावनाओं की तलाश.
अर्थ से भरा जीवन जीने के लिए,
क्या सम्मान नहीं है.
जिस पर आपको,
अपना जीवन बनाना चाहिए ?
इसके लिए चाहे कुछ भी करना पड़े.
या फिर कोई जीवित रहते हुए,
सचमुच मर गया है.
अगर हम जी सकते,
हर दिन अपने चरम पर.
हमें अपने भाग्य के प्रति
आभारी होना चाहिए,
और समय बीतने की
शिकायत नहीं करनी चाहिए.

खुद्दारी

मुझे खुद होना चाहिए.
खुद को समझो,
और समझाओ.

पहले इसके आगे
झुकना बंद करो,
फिर उस के.

दूसरों की इतनी चापलूसी करने से
आप खुद
अपने सबसे बड़े दुश्मन हैं.

हमने खुद को
पूरी तरह खो दिया,
कहाँ है जोश,
कहाँ है अभिमान ?

जमाना जरूर बदलेगा

मेरे प्यार !
घटाटोप मौसम मुझे पसंद है.
यह सूर्य को जन्म देगा.
निश्चित रूप से सूर्य !

कठोर सर्दी को मैं प्यार करता हूँ.
यह निश्चित रूप से,
गर्म गर्मी को जन्म देगी.

नफरत का चरमोत्कर्ष,
मुझे आकर्षित करता है.
यह प्रेम को जन्म देगा.

प्रेम अवश्य है!
अत्याचार का दर्द मुझे पसंद है.
यह न्याय को जन्म देगा.
न्याय पक्का !

मेरे पास आओ

मेरे पास आओ,
शरद ऋतु
और गर्मियों में.
सर्दी और वसंत में आओ.

मेरे पास आओ,
जब पहाड़ियों पर,
घने बर्फ चिपक जाते हैं,
आओ, और शुरुआती वसंत,
तुम्हारे आने का हो सकता है.

मेरे पास आओ जब चाँद,
आसमान से नीचे देखे.
जब सूर्य अस्त होने की
तैय्यारी कर रहा हो.

ऐसा करो,
मेरे पास ही रह जाओ.

सांत्वना

मेरे मुश्किल दिनों में,
मुझे आराम दो.
मैं भोजन और पानी के बिना
रह सकता हूँ,
यदि आप, मेरी अंतिम सांस लेते समय,
मेरे पास रहते हैं.

अपनी आँखों में कुछ आशा लाओ.
जब आप,
अपना आखिरी समय महसूस करते हैं.
आपको भोजन,
या पानी की भूख नहीं लगती.

हाँ ,
अंतिम क्षण में,
अंतिम सांस में,
आप सांत्वना के लिए तरसते हैं.

कुछ समय बाद

कभी हम,
एक-दूसरे की गली से गुजरेंगे.
तुम्हारा चेहरा
झुर्रीदार हो जाएगा.
मेरे बाल सफ़ेद हो जाएंगे.

हमसे कोई नहीं पूछेगा,
कि हम अचानक क्यों रुक गए.

लोग हमारे पास से गुजरेंगे,
या वे किसी के इंतजार में खड़े होंगे,
हम अपनी अप्रत्याशित मुलाकात से,
भ्रमित हो जाएंगे.

जीना मुश्किल है !

शाम अँधेरे में गुम हो जाती है.
और दिन धुंध में डूबा रहता है.
अगर जीवन सिर्फ पांच दिन लंबा है,
तो यह इतना धीमा क्यों है ?

आकाश एक फटे कपड़े की तरह है,
बादल उसके धब्बे हैं.
भगवान तुम्हारी,
इस पत्थर की मूर्ती के सामने
झुक कर जीना मुश्किल है !
बहुत मुश्किल हो गया है.

इस जिंदगी को बांटना
हर दिन सौ टुकड़ों में.
समुद्र तट पर खड़े होने के लिए,
और मरने के लिए,
समुद्र की लालसा.

विरोधाभास

जीवन की अपनी हवा है,
जगमगाता सूर्योदय,
उदास सूर्यास्त.
हर किसी के सपने,
और इच्छाएं होती हैं, कि
वह परेशान न हो.
महलों को हमेशा तालियाँ,
और सन्नाटा चाहिए.
महान समारोहों में,
बुद्धिमान भाषण करते हैं.
सिर्फ भाषण,
अर्थ कुछ नहीं.
नतीजा कुछ नहीं.

मेरे प्यार के लिए

मैं जाऊंगा,
अगर कोई एक शख्स
मुझे रास्ता दिखाता है.
और सड़क पर
मेरे साथ जुड़ जाता है.

यह पत्र सिर्फ मेरे प्यार के लिए है.
किसी और का नहीं होगा.
और किसी को दिया भी नहीं जाएगा.
मेरे इस पत्र को उसके,
दूर ठिकाने पर ले जाओ.
मेरे प्यार के लिए !

मेरा डर

विकसित पक्षी,
पूर्व और पश्चिम,
दोनों ओर उड़ सकते हैं.
लेकिन चूजे, साफ-सुथरे,
अपने घर के आस-पास ही रहते हैं.
इन चूजों की तरह,
मेरा डर,
मुझे घूमने नहीं करने देता.

दिन निकल रहा है

सुबह सवेरे मुल्ला बुलाता है,
बुलाता है,
सुबह आ गई है.
उठो और तैयार हो जाओ.
मैं तुम्हें देखना चाहता हूँ.

इबादत करो.
मेरी आंखों की दावत को,
स्पष्ट समझो,
मेरे पास आओ,
मैं तुम्हें देखना चाहता हूँ.

सब को जाना हैं

जनजातियें,
कहीं और जाने के लिए,
गठरियां बांधती हैं.

पक्षी उत्तर की ओर उड़ते हैं,
और यहाँ नहीं रह सकते.

कुछ भी स्थायी नहीं है,
सबक कठिन है.
फिर भी इसे कोई,
अनदेखा नहीं कर सकता.

मुझे और तुम्हें,
दोनों को जाना है.
नियति का नियम है.

एक समुन्द्र

मेरे दोस्त,
मैं एक समुन्द्र के बारे में
सोच रहा हूँ.

समुन्द्र में डूबे
एक जहाज के बारे में.

क्योंकि मैंने
बहुत सारे आंसू बहाए हैं.

एक समुन्द्र
अब मेरे चारों ओर
बन गया है.

निराशा

गिरती हुई पत्तियाँ,
निराशा लाती हैं.

सूरज की तेज रौशनी से,
जलता बगीचा.

कोयल अपने गुलाब की
तलाश करती है.
झाड़ी से झाड़ी तक,
वह फड़फड़ाती है.
मेरी तरह.

इंतज़ार

मैं जाता हूँ.
और सड़क पर खड़ा हो जाता हूँ.
इंतज़ार में ...
मेरे शब्द लड़खड़ा जाते हैं,
आवाज़ धीमी हो जाती है.
मुझे अपने प्यार से,
मिलने की प्यास और दर्द,
महसूस हो रहा है.
मेरी नजर सड़क पर टिकी हैं.

अकेला नहीं

कभी अकेला नहीं.
एक आदमी जिसे,
साथी की जरूरत है.
वह कभी अकेला नहीं रहेगा.
मुझे उम्मीद है, कि
मुझे कभी भी,
अकेला नहीं रहना पड़ेगा.

एक दिन भी,
मैं अकेला जीना नहीं चाहता हूँ.
तब तक नहीं,
जब तक मुझे,
आदेश दिया गया हो.
लेकिन जब तक,
लोगों को मेरी जरूरत है.

अगर

अगर आसमान, हमेशा साफ,
और बादल रहित होते.
तो क्या हमारे दिल भी ?

फिर हमारे सपने,
हमारे सपने सुंदर,
बहुरंगी फूल होंगे.
हमारे चेहरे और आत्माएं,
नदी के समान निर्मल होंगे.

खिले-खिले फूल सुगन्धित.
पक्षियों के वसंत गीत की धुन,
पूरी दुनिया में सुनाई देगी,
अमृत अभी-अभी,
समुन्द्र से निकला है.
पूरी मानवता के लिए.
फिर डॉक्टर, और दवा का क्या फायदा ?
हम हजारों साल जीएंगे.

परिचय

हम किसी एक
चौराहे पर मिले,
जहाँ युग,
अतीत और वर्तमान मिलते हैं.

एक दूसरे से,
हमारा परिचय कराया गया.
एक पार्क में,
एक कस्बे में.
जिसका नाम भी,
अब मुझे याद नहीं है.

बार-बार दिशा बदलते हुए,
हम एक दूसरे के प्यार में डूबे.

कैसे भूल सकता हूँ

जहाँ मेरा जन्म नहीं हुआ था,
और जहाँ मैं
एक रात भी नहीं रुका ?

मैं उस हिरण के,
शर्मीले रुख को,
कैसे भूल सकता हूँ.
जो मैंने धुंध में नहीं देखा था ?

मैं अपनी रोती हुई माँ की
आवाज़ को,
कैसे भूल सकता हूँ.
जब वह मुझे सह रही थी ?

और मैं कैसे मदद कर सकता हूँ.
लेकिन, मैं उन लोगों को सुन सकता हूँ.
जो मेरी कब्र पर रो रहे हैं ?

किसी को मत बताना

लगता है, कोरोना फिर से आ गया है.
किसी को मत बताना.

एक दीया आज रात जल रहा है.
यह जलाया गया है.
और आज की रात निकल गई
किसी को मत बताना.

जैसे ही, मैं अपने दरवाजे से बाहर आया,
मैं इस धुंध में, अपना रास्ता भटक गया.
मैंने फिर से कविताएँ लिखी हैं,
किसी को मत बताना.

पत्थर के घरों के बीच
यह धुंध मेरा क्या करेगी ?
मेरे प्यार, मैं अभी भी ज़िंदा हूँ.
किसी को मत बताना...

कहाँ मिलोगे

अब इस समय को छोड़ने के बाद,
तुम किस वसंत में मिलने वाले हो ?
कहाँ नजर आओगे ?

क्या मेरी बात सुनी जाएगी ?
सुनोगे तो हंसोगे ?
तुम्हारे सीने से तुम्हारी आवाज
कैसे निकलेगी ?
बोलोगे या रोओगे ?
या तुम चुप रहोगे.
जैसे इस विदाई में ?

मैं तुम्हारा इंतज़ार कहाँ करूँ,
बताओ, कहाँ?
घर पर,
अहाते में,
या कब्र में ?

भगवान

मैं तुम से किस भाषा में निवेदन करूं ?
क्या तुम्हारे लिए एक प्रार्थना काफी है ?
या मैं बार-बार तेरा अनुग्रह करूं ?
मैं न तुम पर हंस रहा हूँ,
न संसार पर.
मैं खुद पर हंस रहा हूँ.
क्योंकि मैं, केवल दो भाषाओं को ही जानता हूँ.
तुम्हारे द्वारा बनाई गई,
हजारों भाषाओं में से.
और उन दो भाषाओं में से,
एक जो मैं जानता हूँ.
वह न तो स्वर्ग में जानी जाती है,
और न ही पृथ्वी पर.
इसलिए मैं तुम से केवल,
उस दूसरी भाषा में प्रार्थना कर रहा हूँ.
जिसे मैं जानता हूँ.
अच्छाई की,
मेरी मदद करो, भगवान !

अकेलापन

मैं अपने आप कहता हूँ
"भगवान लानत है !" इस आराम से.
मुझे अकेले रहने की जरूरत है.
जब दैनिक देखभाल के साथ,
दुनिया का अन्याय,
मेरे दिल को भर देता है.
मैं मौज-मस्ती से उदास हूँ.
मैं गरीबों और धन से,
अंतहीन समारोहों से,
दूर भागना चाहता हूँ.
बस, चैन की बांसुरी बजाने के लिए.
और अकेलेपन का गीत सजाने के लिए.
जब मैं हताश होता हूँ,
तो अपनी आंखें बंद कर लेता हूँ.
और किसी भी मौके पर,
अकेलेपन के लिए प्रयास करता हूँ.
अकेलापन, मेरे सपनों की हकीकत है,

मेरी मर्ज़ी

मैं क्यों आपके
कहने के अनुसार रहूँगा.
मैं तो,
जैसा हूँ,
वैसा ही रहूँगा.
अब मेरे अनुसार ही रहूँगा.
जब तक हूँ,
खुदार ही रहूँगा.
मेरी मर्ज़ी,
जैसे चाहूँ,
वैसे रहूँगा.
चाहे,
दोधारी तलवार बनकर रहूँगा.

तू कौन ?

मैं, मैं हूँ, तू कौन ?
पहचान, तू हैं कौन ?
मैं सदा ही रहा मौन.
मिलते,
तो बोलता है कौन ?

तू मुझे सदा ही याद रहा.
लेकिन ये तुमको,
याद नहीं रहा.

सब तरफ़ सन्नाटा छाया रहा,
जब तक मैं ख़ामोश रहा.
मैं एक कोने में पड़ा रहा,
फिर भी,
हर महफ़िल की जान रहा,

आंसू बहाते हैं

पक्षी कैसे गाते हैं,
फूलों भरे बगीचे में ?
क्या वे जोर से गाते हैं,
या शांत,
शांत स्वर में ?
कवि नरक में कैसे रोते हैं ?
क्या वे हमारी तरह चिल्लाते हैं,
या सिर्फ,
धीरे धीरे आंसू बहाते हैं ?

दोस्त

(मेरे प्रिय मित्र दिनेश के लिए)

अनंत वार्ता के मेरे साथी,
क्यों इतनी जल्दी चले गए, दोस्त.
शायद अपने जीवन की,
सारी परेशानी और जिम्मेदारियां,
बहुत जल्दी निभा लीं.

समाज और धर्म,
सभी का ध्यान रखते हुए,
बहुत जल्दी गुजार दी,
जिंदगी तुमने.
कम होते हैं, तुम जैसे मित्र,
सीधा, सरल और सदा खुशमिजाज.
तुम अंदर से, बाहर से भी ज्यादा खूबसूरत थे.
तुम दूसरों के लिए
एक महान उदाहरण हो.
मुझे तुम्हारे साथ समय बिताना
अच्छा लगता था.

तुम सबसे मजबूत लोगों में से एक,
जिन्हें मैं जानता हूँ.
तुम जितना महसूस करते,
उससे कहीं बड़ा प्रभाव डालते.
तुम हमेशा इतने मददगार रहे.
हमारा परिवार, स्कूल, और समाज बेहतर हैं.
क्योंकि तुम इसका हिस्सा रहे हो.

तुम एक बेहतरीन दोस्त हो.
तुमने मुझे बहुत कुछ सिखाया है,
मैं तुम्हारी वजह से एक बेहतर इंसान हूँ.
मुझे तुम्हारे साथ समय बिताना
अच्छा लगता था.

जब हम छोटे थे
तब से तुम मेरे दोस्त हो.
मुझे अच्छी तरह याद है,
कई सालों तक,
हर रविवार की दोपहर,
मेरे साथ हॉस्टल के फीस्ट का खाना.

फिर पूरे दिन बेफिक्र घूमना.
हम एक साथ बहुत कुछ कर चुके हैं.
और तुम हमेशा मेरे साथ रहे हो.
हर चुनौतीपूर्ण समय के दौरान.
मैं तुम्हारी बातों को कभी नहीं भूलूंगा.
तुम जैसे अद्भुत मित्र का,
आभार व्यक्त करने के लिए,
मेरे पास शब्द नहीं हैं.

हमने ज्यादातर निवेश
साथ में ही किया,
कुछ कमाया, ज्यादा गुमाया,
फिर भी तुम्हारे चेहरे पर,
कभी कोई शिकन नहीं देखी.
हमने, सदैव अपनी समस्यायों को
साझा किया है.
यहाँ तक कि अपने
पारिवारिक अंतरंग संबंधों को भी.

हालांकि, मुझे पता है कि

कभी-कभी तुमको भी,
अपनी समस्याओं का,
सामना करना पड़ता था.
एक दूसरे को, समय समय पर,
उचित सही सलाह मशवरा भी दिया है.
खुले दिल से.
तुम जैसे निष्पक्ष, ईमानदार,
और उदार, बहुत कम पाए जाते है.

मैं उन सभी यादों को,
कभी नहीं भूल सकता,
जीवन के अंतिम क्षणों तक.
जो हमने जिंदगी, और व्यापार के,
उतार चढाव के दौरान, साझा की हैं.
जब मेरे पास कुछ भी नहीं था,
तब भी, तुमने मेरा साथ दिया.
मैं सराहना करता हूँ.
तुम न केवल मेरी मदद करते रहे,
बल्कि जब मुझे,
जब सबसे अधिक आवश्यकता थी,

तुमने हमेशा मुझे सही सलाह दी.

तुम इतने अच्छे थे दोस्त,
जिसके पास मेरी पीठ है.
मैं जीवन में, तुम से बेहतर दोस्त के लिए,
इच्छा नहीं कह सकता था.
हमेशा मेरे साथ रहने के लिए,
तहे दिल से धन्यवाद !

मुझे खेद है, कि मैंने तुमको,
पहले धन्यवाद नहीं दिया.
शब्द मेरे पास कभी नहीं आए.
लेकिन मैं चाहता हूँ
कि तुम यह जान लो कि,
तुम मेरे जीवन के,
सबसे महत्वपूर्ण लोगों में से हो.
यह धन्यवाद !
अपने पच्चास सालों के रिश्ते
का वर्णन करने के लिए,
पर्याप्त नहीं होंगे.

प्रिय अरुण

मेरी प्रेरणा,
मेरे मार्गदर्शक,
जिसके माध्यम से मैंने,
खुद को सबसे अच्छे से देखा है.
तुम, एक महान धन,
एक महिमा, एक जादू थे.

मुझे कहना होगा, कि
तुम्हारे साथ बिताये समय ने,
मुझे अपने बारे में,
और उन विभिन्न चीजों के बारे में,
बहुत कुछ सिखाया है.
हम एक दूसरे के साथ,
आराम से बात कर सकते थे.

तुम,
शांत जल पर
सुने जाने वाले संगीत की तरह.

चीड़ की तरह, जिनके बीच से,
जब हवा गुजरती है.
सागर की गहराइयों में,
मोतियों की तरह.
उन तारों की तरह,
जो आसमान को चमकाते हैं.

तुम,
जैसे महक गुलाब की.
ओस और सुबह की ताजगी की तरह.
तपती घास को,
चूमती धूप की तरह,
मक्के पर रेशम के तसले की तरह.
उन झरनों की तरह,
जहाँ कमल खिलते हैं,
इंद्रधनुष की तरह,
जो नीले आकाश को समेटे हुए है.
बादलों की तरह,
जब सूरज ढलता है.
पवित्रता की सांस लेने वाली,

हर चीज की तरह,
जैसे ये एक दोस्त का प्यार है.
बहुत दूर चले गए तुम.
और साथ, एक एक कर
कौशिक और सुरेश को भी
बुला लिया तुमने.
बहुत अकेला रह गया हूँ, मैं,
तुम्हारे बिना.

कुछ और क्षणिकाएं

१

मेरे दोस्त,
कौन-सी गंभीर
मुसीबतें जागती हैं.
जब लोग सोते हैं,
तो, कौन-सी मुसीबतें जागती हैं.
गरीबों को ज्यादा दुख
सहना पड़ता है.
भगवान,
सिर्फ जागरण में जाते हैं.

२

एक पिटते हुए
छोटे नौकर की चुभती चीख,
कुछ लोगों के
रात के सपने में खलल डालती है.

लेकिन वो दिन ढल गया,
ईंट-ईंट बिखर गई.
उसके जीवन का महल,
उसका सारा सपना.

३

मथना,
और मथना,
तो मक्खन आ जाएगा.
इच्छा से खाओ-पीओ,
गुनगुनाते हुए.
कुछ लोगों को,
छाछ भी नसीब नहीं होती.
यहाँ हमारे कार्यालय हैं,
नेता हैं,
अभिनेता हैं.

४

ओह, यह स्थान पवित्र है.

आशीर्वाद है,

उपचार गुणों से,

जहाँ यह जड़ी-बूटी,

बहुतायत में उगती है,

यहाँ रोग से,

कोई व्यथित नहीं होता.

५

मैंने लाल गुलाब उठाए,

एक ट्रे भरी,

सुबह तक

मेरे पास उन्हें रेहने दिया.

रात में उठ कर,

तीन बार पानी का छिड़काव किया है.

उनकी ताजगी के लिए.

जब तुम अपने प्यार को देखने आओगे,

तब वे फूल,

तुमसे मिलने के लिए उठेंगे.
सुगंधित, तुम जैसे.

६

मैं
जितना सहन कर सकता हूँ,
उससे अधिक,
तुम, मुझे क्यों प्रताड़ित करते हो ?

७

मेरे प्यार,
आओ, जहाँ गुलाब उगते हैं.
पंक्ति में,
बगीचे की पंक्ति में.
तुम से,
एक मुस्कान की अपेक्षा है.
और मैं तुम्हारी जलती हुई वेदी पर,
अपना दिल लगाऊंगा.

८

चलो, हमारे बगीचे की की सैर करते हैं,
वहीँ कहीं हमारे होंठ,
जोश से मिल सकते हैं.
हम कोकिला की तरह,
गाएंगे और गुनगुनायेंगे.
अपने पैरों के नीचे की धरती को,
नहीं महसूस करेंगे.

९

आओ, प्यार करो,
हमारे गावों के खेतों में,
बगीचे में जहाँ गुलाब के फूल,
दीवार के ऊपर.
और, मेरे पास आओ, एक खुश,
आनंदमय जीवन के लिए.

१०

चंद्रमा आराम करने के लिए,
नीचे खिसक रहा है,
नींद न आने से,
मेरे हाथ काँप रहे हैं.
मेरे प्रिय से लिपटने के लिए.
मेरे प्रिय के कोमल सीने को,
छूने के लिए,

११

हमारे बगीचे में
एक बाज उड़ गया.
उसका शिकारी,
पीछा करने का इरादा रखता है.
भले ही मैं यहाँ मृत पड़ा हूँ,
मैं तुम्हारे एक चुंबन से,
फिर जीवित हो जाऊंगा.

१२

चंद्रमा अस्त हो रहा है,
उदास और कमजोर,
नींद में राहत पाने के लिए,
मैं असफल रहा.
जहाँ गुलाब उगते हैं,
गुलाब सुगन्धित हैं.
प्रेम-बीमार कोकिला से पहले.

आभार

पिसुरवो के रूप में जाने जाने वाले चित्रकार जितेंद्र सुरलकर की कलात्मक क्षमता बहुत कम उम्र में ही स्पष्ट हो गई थी. उनकी रचनात्मकता असाधारण है, और इस पुस्तक में उनके द्वारा बनाई गई रुचि और शैलियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है. उनकी ये कलाकृतियां कविताओं को कहानी में खींचतीं हैं. जितेंद्र सुरलकर पिसुरवो एक प्रसिद्ध वरिष्ठ कलाकार हैं, जो मुंबई, भारत से रहते हैं और वहीँ काम करते हैं.

हम उनके इस सहयोग के लिए हृदय से आभारी हैं.